वितान पाठ-2 जूझ

आनंद यादव

1. 'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

उत्तर- किसी भी कहानी का शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो पूरी कहानी का केंद्र बिंदु हो। इस आधार पर 'जूझ' शीर्षक बिल्कुल सही है। जूझ का अर्थ है - संघर्ष। प्रस्तुत पाठ में लेखक शुरू से लेकर अंत तक पढ़ने के लिए जूझ रहा है। वह पूरी मेहनत से विपरीत परिस्थितियों को मात देने में लगा हुआ है और अंत में विजयी भी होता है।

कथानक का नायक आनंद पाँचवी कक्षा में पढ़ना चाहता है। वह अपनी माँ से प्रार्थना करता है कि गाँव के मुखिया के सहयोग से पिताजी से पढ़ने की अनुमति ले। इस कार्य में वह सफल हो जाता है और कक्षा में वसंत पाटिल नायक विद्यार्थी के साथ बैठता है जिससे वह भी होशियार हो जाए। मराठी के सहयोगक कक्षा में पढ़ाते समय पूरी तरह रम जाते थे, अभिनय करने लग जाते थे जिससे आनंद को लगने लगा कि वह भी ऐसा कर सकता है। अतः वह खेतों पर काम करते हुए जोर-जोर से गाने लगता, कविताएँ बनाता जिससे उसकी जीवन-बोली पूरी तरह बदल गई और साहित्य में रुचि जग गई।

2- स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर- जब लेखक को यह ज्ञात हुआ कि मराठी के

अध्यापक सौंदलगेकर स्वयं कविता रच रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कविता के लिए विषयवस्तु अपने ही परिवेश में उपलब्ध होता है, तब लेखक को लगा कि कविता लिखने वाला व्यक्ति कोई विशेष जीव नहीं होता बल्कि वह भी साधारण मनुष्य होता है। उसके अंदर भी क्रोध, लोभ व मानवीय इच्छाएँ होती है। इस तरह लेखक के अंदर स्वयं कविता रचने का आत्मविश्वास जगा तथा मन में जो कवियों के प्रति भय था वह निकल गया।

3- श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।

उत्तर- श्री सौंदलगेकर मराठी के अध्यापक थे। वह इतनी तन्मयता से अध्यापक करते थे कि विषय में पूरी तरह रम जाते। मराठी कविताओं के साथ-साथ उन्हें अनेक अंग्रेजी कविताएँ भी कंठस्थ थी। वह कविताओं को आरोह-अवरोह के साथ सुनाते थे। कभी-कभी अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण करते। लेखक इन्हीं विशेषताओं से प्रेरित था। अब वह भी खेतों पर काम करते हुए, पशु चराते हुए कविताएँ गाया करता तथा कभी-कभी अभिनय भी करता। अध्यापक लेखक द्वारा लिखी गई कविताओं का संशोधन करते तथा उसे कविता के लय छंद अलंकार आदि के बारे में बताते। इन्हीं कारणों से लेखक के मन में कविताओं के प्रति रुचि जगी।